Dr Vandana Suman
Associate professor
Deptt of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
M. A III Sem - CC - 14
Philosophy of Religion - II

"Problem of Evil and suffering"

विश्व में "अशुभ" का हम अनुभव करते हैं। अशुभ मनुष्य के दु:खों का मूल कारण है। बौद्ध धर्म के अनुसार जगत का हर क्षण दु:ख से भरा है। धर्म दर्शन में अशुभ की समस्या को लेकर काफी वाद-विवाद हुए हैं फिर भी यह समस्या आज तक नहीं सुलझ पायी है।

जब हम अशुभ की समस्या पर विचार करते हैं तो पाते हैं कि अशुभ की समस्या प्राचीनकाल के लोगों के लिए समस्या नहीं थी। आदिकाल के धर्म पर दृष्टिपात करने पर पता चलता है कि प्राणवाद, टोटमवाद, फीटिशवाद तथा पूर्वज आराधना में विश्वास करनेवाले एवं अनेकेश्वरवादी धार्मिक विचारधारा को माननेवालों के लिए भी अशुभ कोई समस्या नहीं थी। इसका कारण यह है कि ये लोग जीव की सत्ता में विश्वास करते थे। जिनमें कुछ जीव नेक स्वभाववाले थे और कुछ दुष्ट स्वभाववाले थे। अत: शुभ की उत्पत्ति का कारण वे नेक स्वभाववाले जीव को मानते थे और अशुभ की उत्पत्ति का कारण दुष्ट स्वभाव वाले जीव को मानते थे।

कुछ लोगों ने अशुभ की व्याख्या दो निरपेक्ष मूल तत्वों या दो सापेक्ष मूल तत्वों की सहायता से की है। प्रथम प्रकार के विचारकों में प्लेटो और अरस्तू हैं।

प्लेटो ने इस विश्व की बुराइयों की व्याख्या सत्ता के

June 2011
M	T	W	T	F	S	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

साथ प्रसन्नता जैसे आदि चलकर
उन्होंने मृतक का त्याग कर दी भी प्रकाश के
ही तात्पर्यों बारते ही किया है। सत्ता के
स्तरों का पूर्ण और अभाव का अनुगम
स्थान माना और असत्ता को जिसने
विश्व की सभी बुराइयों का कारण बताया
है अरस्तू के दर्शन में भी द्रव्य
और आकार का वर्गीकरण मिलता
है। इसके अनुसार विश्व अपूर्णता
से पूर्णता के क्रम में आकार की ओर विकास
करता जा रहा है और ज्यों-ज्यों
यह आकार के समीप पहुंचता जा रहा
है त्यों-त्यों विश्व की बुराइयाँ
इसके अनुसार घटते जा रहे हैं।
अतः अरस्तू ने भी सांसारिक अशुभ
का कारण द्रव्य को ही माना है। इस प्रकार
हम पाते हैं कि निरपेक्ष मूल
सत्ताओं में विश्वास करने वालों
के लिए भी अशुभ की व्याख्या
कोई समस्या का रूप धारण नहीं करती
है। इस प्रकार के विचारकों
में पारसी धर्म के संस्थापक जरथुस्त्र
का नाम प्रमुख रूप से सामने आता
है। जिन्होंने अशुभ की व्याख्या
करने के लिए एकेश्वरवादी
होते हुए भी दो सापेक्ष मूलतत्वों
की सहायता ली है। पारसी धर्म
के अनुसार अहुरमज्दा और
अहरिमान दोनों को ईश्वर माना
गया है। अहुरमज्दा सर्वशक्तिमान
सर्वज्ञ तथा अन्य गुणों से

भी विभाषित है। यह पूर्णतः शुभ है। इसके अतिरिक्त दूसरा ईश्वर अहरिमन है जो पूर्णतः अशुभ है तथा विश्व के सभी अशुभों का यही कारण है और इसी कारण अहुरमज्दा की तुलना प्रकाश से तथा अहिरमान की तुलना अन्धकार से की गयी है। शुभ का कारण अहुरमज्दा और अशुभ का कारण अहिरमान को माना जाता है। इस प्रकार हम पाते हैं कि द्वैतवादी शुभ के सम्मुख अशुभ कोई समस्या नहीं है।

सर्वेश्वरवाद में अशुभ की समस्या का विकास नहीं हो पाता है। सर्वेश्वरवाद के अनुसार ईश्वर और विश्व में तादात्म्य है क्योंकि विश्व की प्रत्येक वस्तु ईश्वर का ही प्रकाशित रूप है तो फिर शुभ और अशुभ का भेद कैसा? विश्व में सिर्फ शुभ ही शुभ है या फिर अशुभ ही अशुभ।

अनीश्वरवाद में अशुभ की समस्या उपस्थित ही नहीं होती। इनके अनुसार विश्व में न तो शुभ है और न अशुभ। अनीश्वरवाद में अशुभ की समस्या उपस्थित ही नहीं होती। इनके अनुसार विश्व में न तो शुभ है और न अशुभ। एक ही बात एक दृष्टिकोण से शुभ है तो दूसरे दृष्टिकोण से अशुभ है।

June 2011
M T W T F S S
1 2 3 4 5
6 7 8 9 10 11 12
13 14 15 16 17 18 19
20 21 22 23 24 25 26
27 28 29 30

जैसा कि आस्तिकों में शुभ है तो नास्तिक के वास्ते नास्तिकों में अशुभ। अतः अनीश्वरवादियों के अनुसार अशुभ की समस्या ही असंगत है। ईश्वरवाद के सम्मुख अशुभ एक ऐसी समस्या बनकर आती है जिसका समाधान अत्यन्त ही कठिन जान पड़ता है।

ईश्वरवाद के सम्मुख अशुभ एक ऐसी समस्या बनकर आता है। जिसका समाधान अत्यन्त ही कठिन जान पड़ता है। ईश्वरवादियों के अनुसार एक ओर ईश्वर को शुभ तथा सर्वशक्तिमान कहा जाता है, परन्तु दूसरी ओर विश्व में अशुभ की आस्था पाई जाती है। ईश्वरवाद के सामने यह समस्या द्विविधा का रूप लेती है। पैटरसन ने इस द्विविधा को इन शब्दों में रखा है। "ईश्वर संसार में अशुभ के अनाधिकार प्रवेश को रोक दे सकता है किन्तु या तो वह ऐसा करना ही नहीं चाहता, ऐसी स्थिति में वह शुभ नहीं हो सकता, या वह ऐसा करने में ही असमर्थ है जिस स्थिति में वह शुभ भले ही हो, लेकिन यह स्पष्ट है कि उसकी शक्ति सीमित है। अतः ईश्वरवाद के सामने अशुभ एक प्रकार की चुनौती है। इस प्रकार अशुभ की समस्या सिर्फ ईश्वरवादियों की ही समस्या है।

अशुभ दो प्रकार के होते हैं :→
1. प्राकृतिक अशुभ (Natural evil)
2. नैतिक अशुभ (Moral evil)

प्राकृतिक अशुभ उन अशुभों को कहते हैं जो प्रकृति में विद्यमान हैं। जैसे- भूकम्प, बाढ़, मृत्यु, रोग, साँप इत्यादि। प्राकृतिक अशुभ से सिर्फ मानवों को ही दुख नहीं होता है बल्कि अन्य सभी जीवों को भी कष्ट झेलना पड़ता है।

नैतिक अशुभ मानव के कार्य-कलापों से उत्पन्न होते हैं। मानव को संकल्प स्वातंत्र्य है जिनके अनुचित प्रयोग के फलस्वरूप नैतिक अशुभ का जन्म होता है। चोरी, डकैती, पाप, हत्या, नैतिक अशुभ कहे जाते हैं।

नैतिक अशुभ और प्राकृतिक अशुभ में अन्तर यह है कि नैतिक अशुभ का कारण मानव कदापि नहीं कहा जा सकता। कुछ दार्शनिकों का कहना है कि नैतिक अशुभ प्राकृतिक अशुभ की अपेक्षा अधिक प्राचीन है। मानव ने ईश्वर के द्वारा दिये गये संकल्प स्वातंत्र्य का उचित प्रयोग नहीं किया। तब ईश्वर ने मानव के बीच प्राकृतिक अशुभ को दण्ड स्वरूप भेजा।

परन्तु कुछ दार्शनिकों ने प्राकृतिक अशुभ को नैतिक अशुभ की अपेक्षा अधिक प्राचीन माना है। प्राकृतिक अशुभ ने मानव को चुनौती दी और इसका फल यह हुआ कि इसने असभ्यता को अपनाया और इस प्रकार विश्व में अनैतिकता आई। अतः इनके अनुसार नैतिक अशुभ प्राकृतिक अशुभ की अपेक्षा अधिक प्राचीन है - यह मत

June 2011
M T W T F S S
1 2 3 4 5
6 7 8 9 10 11 12
13 14 15 16 17 18 19
20 21 22 23 24 25 26
27 28 29 30

प्रतिमा गलत है। प्राकृतिक अशुभ प्रकृति में आरम्भ से ही था और इससे ही नैतिक अशुभ का कारण है। यॉ. गेलवे ने इसीलिए कहा है कि यह अभाव पीड़ा, स्वच्छन्द मनुष्य को नैतिक अशुभ की ओर ले जाते है। यदि प्राकृतिक अशुभ की अनुभूति मानव को नहीं होती तो वह नैतिक अत्याचार करने के लिए बाध्यता नहीं महसूस करता।

ईश्वरवादियों ने अशुभ की व्याख्या करने के लिए भिन्न-भिन्न तर्कों का प्रयोग किया है। जो इस प्रकार है —

1. अशुभ मानव संकल्प स्वतंत्र के दुरुपयोग का परिणाम है। कुछ ईश्वरवादियों के अनुसार ईश्वर ने लोगों को संकल्प स्वतंत्र दिया जिससे वे स्वतंत्रतापूर्वक किसी एक संकल्प को चुनने में समर्थ हो सकें। अर्थात या तो लोग ईश्वर को प्यार करें या घृणा चूंकि मानव ने ईश्वर के प्रति अनादर या घृणा का प्रदर्शन किया। जिसके फलस्वरूप संसार में अशुभ व्याप्त है। अतः अशुभ का कारण स्वयं मानव है।

विरुद्ध में कान्ट ने इस उक्ति के कहा है कि यह उक्ति ईश्वर की सर्वशक्तिमता का खण्डन करती है। क्या ईश्वर ऐसा नहीं कर सकता था

कि मानव अपने संकल्प स्वातंत्र्य का दुरुपयोग न करता? यदि वह ऐसा करने में असमर्थ था तो ईश्वर को सर्वशक्तिमान कहना भ्रामक है। यदि यह मान भी लिया जाए कि अशुभ मानव संकल्प स्वातंत्र्य के गलत प्रयोग का परिणाम है, फिर भी इससे नैतिक अशुभ की व्याख्या होती है। प्राकृतिक अशुभ जैसे – भूकंप, बाढ़ इत्यादि की व्याख्या नहीं हो पाती। अतः यह सन्तोषजनक नहीं प्रतीत होती है।

२. प्राकृतिक अशुभ नैतिक अशुभ के लिए दण्डमात्र है। (Natural evil as Punishment for moral evil)
ईश्वर के नैतिक नियमों का मानव ने उल्लंघन किया, जिससे क्रोधित होकर ईश्वर ने अशुभ का निर्माण किया। भूकम्प, बाढ़ आदि इसके प्रमाण हैं।

उपर्युक्त मत के विरुद्ध में यह कहा गया है कि विचार की कसौटी पर रखने से यह युक्ति निष्प्राण प्रतीत होती है। क्या ईश्वर भी मनुष्य की भाँति क्रोध के अधीन है? क्या पूर्ण प्रेममय ईश्वर मानव को दण्ड दे सकता है? आधुनिक अपराध विज्ञान अपराधियों को सजा देने के बजाय उनके सुधार पर जोर देता है। अतः यह विचार कि ईश्वर ने मानव को उनके कुकर्मों के लिए दण्ड देने के लिए प्राकृतिक अशुभ की रचना की है, ईश्वर

के लिए योगदान नहीं प्रतीत होता है।
15. प्रकृति का अशुभ सफलता में सहायक है। (Natural evil is conducive to success) अगर विश्व में अशुभ नहीं होता तो विश्व की प्रगति रुक जाती। चरित्र का विकास कठिनाइयों द्वारा ही सम्पन्न होता है। दुःख की पीड़ा से त्रस्त होने पर मानव जो विवेक की खोज करता है और उसे ग्रहण करने के बाद सुख की अनुभूति प्राप्त करता है। यह युक्ति भी ठीक नहीं जँचती है, क्योंकि अशुभ से सर्वदा प्रेरणा ही नहीं मिलती बल्कि अशुभ के कारण कभी-कभी मानव का पतन होने लगता है। एक आदर्श व्यक्ति अशुभ के कारण क्रोधी, पतित, उदासीन एवं निराशावादी हो जाता है जिसके चलते उसकी प्रगति रुक जाती है।
16. अशुभ शुभ के मूल्य को बढ़ाने के लिए आवश्यक है। अशुभ के अभाव में शुभ का मूल्यांकन करना कठिन ही नहीं असम्भव जान पड़ता है। अतः अशुभ शुभ का मापदण्ड है जिसप्रकार मिठास के लिए खारा जरूरी है उसीप्रकार शुभ के लिए अशुभ आवश्यक है। इस युक्ति के विरोध में यह कहा गया है कि प्रत्येक वस्तु का अर्थ उसके विरोधी तत्त्व को जानकर सर्वदा नहीं की जा सकती। जीवन का आनन्द लेने के लिए

रोगी को जीवनयापन करना आवश्यक नहीं। अतः यह मानना कि अशुभ की व्याख्या के लिए अशुभ आवश्यक है गलत है।

5.9 अशुभ अपूर्ण शुभ है। हीगेल महोदय ने बताया है कि विश्व का अशुभ अपूर्ण शुभ है। किसी भी वस्तु का आंशिक रूप अशुभ प्रतीत होता है परन्तु पूर्णरूप आकर्षक प्रतीत होता है।

ध्यान देने पर हीगेल का यह मत मान्य प्रतीत नहीं होता क्योंकि उनके विचार में विरोधाभास है। अपूर्णता से पूर्ण शुभ का अनुमान करना उचित नहीं जान पड़ता। फिर यदि समष्टि स्वयं शुभ है तो इसके अवयव अशुभ क्यों है। यदि हम समष्टि और इसके अवयव दोनों को शुभ मान लें तो क्या कठिनाई होगी?

6. अशुभ, अदृश्य, अज्ञात जीवों के लिए आवश्यक है। संसार में ऐसे ऐसे जीव हैं जिसका निर्वाह अशुभ से होता है — भूत, प्रेत, राक्षस, पिशाच आदि अनेक जीव हैं जिनका हमें प्रत्यक्षीकरण नहीं होता है। अशुभ इन जीवों के लिए उपयोगी सिद्ध होता है।

अन्य युक्तियों की भाँति यह भी मान्य नहीं किया जा सकता क्योंकि इसका आधार सिर्फ विश्वास है विवेक नहीं।

7. अशुभ मिथ्या

June 2011

M	T	W	T	F	S	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

है। कुछ तार्किकों के अनुसार अशुभ का अस्तित्व केवल मानव की मान्यता ही है व शंकर ने अशुभ को माया माना है। इनके अनुसार अशुभ भ्रम ही है। आगस्टिन के अनुसार विश्व में जो कुछ है वह शुभ है, अशुभ का कोई अस्तित्व नहीं है। हीगल के अनुसार आंशिक दृष्टि से अशुभ का अस्तित्व है, पर पूर्ण दृष्टि से अशुभ का अस्तित्व नहीं है। अतः अशुभ सत्य नहीं है।

इसके विरुद्ध में यह कहा गया है कि जो व्यक्ति दुःख को झेलता है उसके लिए दुःख सत्य है जिसे झुठलाया नहीं जा सकता। फिर अशुभ को असत्य मान लेने से पाप अर्थात नैतिक अशुभ की व्याख्या कठिन हो जाती है। अतः अशुभ को असत्य कहना ठीक नहीं है।

8. अशुभ अनेक प्रत्ययों का मूल्य निश्चित करता है। कुछ लोगों का कहना है कि अशुभ अनेक भावनाओं तथा विचारों को जीवित रखता है। प्रेम, सहानुभूति, दया, क्षमा आदि प्रत्ययों का प्रदर्शन अशुभ के कारण होता है। किसी की मृत्यु पर हम उसके परिवार के लोगों के प्रति सान्त्वना

सहानुभूति उत्पन्न करते हैं।
उपर्युक्त उक्ति भी तर्कसंगत नहीं है। यह तर्क कुछ ऐसा ही है। जिसप्रकार यदि कोई कहे कि सुव्यवस्थित समाज के लिए पुलिस की व्यवस्था आवश्यक है और इस व्यवस्था की उपयोगिता सिद्ध करने के लिए यह भी आवश्यक है कि समाज में कुछ ऐसे भी लोग रहें जो निरन्तर समाज विरोधी कार्य जैसे चोरी, डकैती, लूटमार आदि करते रहें।

9. अशुभ धर्म के लिए अनिवार्य है। अगर अशुभ नहीं होता तो धर्म का प्रयोजन ही नष्ट हो जाता। इसके विरोध में यह कहा गया है कि यदि अशुभ से धर्म का विकास होता है तो अशुभ सिर्फ वैसे ही लोगों को हानी होनी चाहिए जो धर्म में विश्वास करते हैं। परन्तु इसके विपरीत अशुभ जैसे - भूकम्प, बाढ़ आदि से उन लोगों को भी हानी पहुँचती है जो अधार्मिक हैं। अतः यह विचार भी उचित नहीं जान पड़ता है।

इसप्रकार हम देखते हैं कि अशुभ के प्रकार तथा ईश्वरवादियों के भिन्न - भिन्न तर्कों का अपना महत्व है परन्तु फिर भी वे अशुभ की व्याख्या पूर्णरूप से करने में असमर्थ हैं। अशुभ की समस्या का समाधान करना स्पष्टतः कठिन है।